हरियाणा सरकार

श्रम विभाग

ग्रादेश

दिनांक 12 नवम्बर, 1987

सं० ग्रो० वि०/एफ०डी०/177-87/45255.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये हैं कि मैं० मुख्य प्रशासक हरियाणा ग्ररबन डिवैलामेण्ट ग्रथाटों सैंक्टर 16, फरीदाबाद के श्रीमक श्री गिराज सिंह पुत्र श्री सक्क राम मार्फत 2130, सैक्टर 8, फरीदाबाद तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंबि हस्याणा के सज्यपाल इस विवाद को त्यायिक्षिय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलियें, अब, भोद्योगिक विवाद भिष्टिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की मई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त भिष्ठिनियम की धारा 7-क के अधीन गठित श्रीद्योगिक भिष्ठिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादप्रस्त मामला/मामले हैं भयना विवाद से मुसंगत या उम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट तील मास में देने हेतृ निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री गिराज सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं० ग्रो० वि०/पानी/121-87/45262.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० मैनेजिंग डायरैक्टर, दी करनाल सैण्डल को-ग्रोप्रेटिव बैंक लि०, दी माल, करनाल, के श्रीमक श्री वेद प्रकाश पाल, पुत श्री मोलू राम, मकान नं० 202 वार्ड नं० 9, गांव व डा० घरोंडा, जिला करनाल तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीदोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हैतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, भोद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मिन्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 3(44)84-3-श्रम, दिनोक 18 मंत्रील, 1984, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, अम्वाला, को विवाद प्रस्त या उस से सम्बन्धित नीचे लिखा मामना न्यायिन गेंच एवं गंचाट जीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री वेद प्रकाश पाल की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं भो वि | भिवानी | 141-87 | 45269. — चूं कि हिरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं मैंनेजिंग ग्रायरैक्टर, दी हिरियाणा स्टेट फैडरेशन आफ कंजुमरज कोप्रेटिव होलसेल स्टोर्ज लिं , एस विशेषा गं वार्व 1014-15, सैक्टर 22-बीं , चण्डीगढ़, (2) एरिया मैंनेजर, दी हिरियाणा स्टेट फ़ैडरेशन आफ कंजुमरज कोप्रेटिब होलसेल स्टोर्ज लिं , चरखी दादरी, जिला भिवानी, के श्रीमक श्री रणबीर सिंह, पुत्र श्री मेहर सिंह, गांव धनासरी, डां चन्दवास, तह वरखी वादरी, जिला भिवानी, तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय संगंझते हैं ;

इसलिये, मब, भीव्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई सक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को

विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्गय एवं पंचाट तीन मास में देने हुँतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रवन्त्रकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामना है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रयवा सम्बन्धित मामला है :---

> क्या श्री रणवीर सिंह, सेत्जमैन की सेवाभ्रों का समापन न्यायोचित तथाठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं भो वि | कि मैं दी कुछक्षेत्र सैण्ट्रल कोप्रें दिवा बैंक लि , कुछक्षेत्र, के श्रमिक श्री बलदेव सिंह, पुत्र श्री सेवा सिंह, गांव व डा ज्योतिसर, जिला कुछक्षेत्र तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है ;

श्रीर चंिक हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं 3(44)84—3श्रम, दिनांक 18 श्रप्रैल, 1984, द्वारा उत्तत श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला, को विवादप्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रिमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

धौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रन, ग्रोद्यौगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं० 3(44)84-3न्नम, दिनांक 18 भ्रप्रैल, 1984, द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7 के भ्रधीन गठित श्रम न्यायालय, भ्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक है बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथना सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री मुनीश कुमार की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं ग्रो वि । एफ ब्ही । 151-87/45323. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं । भारतीय कटलर हैमर लि ।, 20/4, मधुरा रीड, फरीदाबाद, की श्रमिक श्री रणबीर सिंह, मार्फत सींटू कार्यालय, 2/7, गोपी कलोनी, ग्रोल्ड फरीदाबाद तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा अवान की गई मित्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7-क के अधीन गठित औद्योगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिद्धिट मामले जो कि उक्त प्रबन्धक तथा श्रमिकों के बीच था तो विवादग्रस्त मामला/मामले है अथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला /मामले है न्यायनिर्णय एवं पंचाद 3 मास में देने हेत् निर्दिष्ट करते हैं:---

क्या श्री रणबीर सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत की हकदार है ?

> श्रीर० **एस० ग्रंग्रवाल,** उप सचिव**, हरिया**णा सरकार श्रम विभाग ।